शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जून 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

आर्य समाज के प्रचार में हिन्दी पत्रकारिता का योगदान

वीरेन्द्र कुमार (शोधार्थी)
डॉ. संजय कुमार सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर (इतिहास विभाग)
एम.एम.एच. कॉलेज
गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

पत्र-पत्रिकाएं किसी भी समाज की ऐतिहासिक, राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं धार्मिक घटनाओं को न केवल संजोए हुए रखती हैं, बल्कि उनका एक विशिष्ट ढंग से विश्लेषण एवं मूयांकन भी करती हैं। पत्र-पत्रिकाएं समाज का ऐसा दर्पण हैं, जिसमे समाज का प्रतिबिम्ब स्पष्ट एवं मुखर होकर स्वयं बोलने लगता है। 19 वीं सदी के मध्य मे आर्य समाज की स्थापना भारतीय समाज सुधार आन्दोलन में एक क्रान्तिकारी घटना थी। इसके संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने विचारों को भारतीय जन साधारण वर्ग मे फैलाने के लिये स्थानीय भाषा का प्रयोग किया तथा हिन्दी पत्रकारिता को इसका माध्यम बनाया। तत्कालीन लेखक तथा सम्पादकीय लेखों ने अपनी लेखनी के माध्यम से आर्य समाज को एक राष्ट्रीय आंदोलन का स्वरूप प्रदान किया। प्रस्तुत शोध पत्र में आर्य समाज के प्रचार में हिंदी पत्रकारिता के योगदान की चर्चा की गयी है।

युग निर्माता स्वामी दयानंद सरस्वती

स्वामी दयानंद सरस्वती 19वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में प्रारम्भ हुए भारतीय पुनर्जागरण युग के महान युगनिर्माताओ में से एक थे। वे केवल एक समाज सुधारक ही नहीं थे वरन् एक प्रगतिवादी चिन्तक भी थे। वह प्रथम भारतीय थे जिन्होंने सबके लिये समान अवसर और सब मनुष्यों की समानता के सिद्धान्तों को प्रतिपादित किया। उनके ये सिद्धान्त पाश्चात्य विचारों से प्रभावित नही थे। उन्होंने जो भी मन्तव्य प्रतिपादित किये वे उनके मौलिक चिन्तन का ही परिणाम थे या फिर उनके वेद तथा अन्य प्राचीन हिन्दू धर्म ग्रंथों की तार्किक एवं नवीन व्याख्या का परिणाम थे।1

भारत के लम्बे इतिहास में 19वीं शताब्दी कई सन्दर्भों में एक अतिस्मरणीय कालावधि है। सर्वप्रथम इस शताब्दी में ब्रिटिश साम्राज्यवादियों ने भारत को पूर्णत: पराधीन बना दिया था। ब्रिटिश शासकों का उद्देश्य केवल भारतीयों का दमन व आर्थिक शोषण ही नहीं था, वरन् भारतीयों की मानसिकता को भी वशीभूत करना था। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये अपनी भाषा इंग्लिश को इस देश की शिक्षा का माध्यम बनाया। भारत के साहित्य व पाठ्यचर्या की उपेक्षा की तथा भारतीय शाखाओं की उन्नति को अवरूद्ध करने के सभी प्रयत्न किये। इस शिक्षा नीति के परिणामस्वरूप ब्रिटिश शासकों द्वारा स्थापित स्कूल व कॉलेज से शिक्षा प्राप्त युवक व नवयुवतियाँ भारत की प्रत्येक वस्तु को हेय तथा ब्रिटिश की प्रत्येक वस्तु को उत्कृष्ट समझने लगे। यहाँ तक कि राजा राममोहन राय तथा महादेव गोविन्द रानाडे जैसे महान सुधारकों ने

भी पश्चिम से प्रेरणा प्राप्त की। यही कारण था कि इन सुधारको का प्रभाव थोड़े से ऊपरी वर्ग के बुद्धिजीवियों तक ही सीमित रहा तथा वे भारतीय जन साधारण के विश्वासों, रितिरिवाजों तथा आचरण में कोई विशेष परिवर्तन न ला सके।

स्वामी दयानन्द के द्वारा किए गये सुधारों की प्रकृति इसके ठीक विपरीत थी। उन्होंने इस आंदोलन की प्रेरणा भारत के गौरवशाली अतीत से ली तथा अपने मन्तव्यों का प्रतिपादन इस ढंग से किया कि भारतीय जनता ने उन्हें आसानी से ग्रहण कर लिया। इस कार्य को भलीभांति पूर्ण करने के लिये उन्होंने राष्ट्र भाषा का प्रयोग किया जिससे उनके विचार जनसाधारण तक बिना किसी अवरोध के पहुँच सकें।2

एक सुधारक के रूप में स्वामी दयानन्द ने हिन्दू समाज में प्रचलित कुरीतियों के विरूद्ध जोरदार आवाज उठाई। वे जाति प्रथा के कट्टर विरोधी थे। वे हिन्दू समाज के चार वर्णों का अर्थ जन्म पर आधारित जात-पात नहीं मानते थे। उनका विचार था कि व्यक्ति की समाज में स्थिति उसके जन्म या वंश पर निर्भर न होकर योग्यता पर निर्भर होनी चाहिये।3 स्वामी जी के सुधार कार्यो में स्त्री शिक्षा व विधवा पुनर्विवाह उल्लेखनीय हैं। उनके अनुसार स्त्रियों का दर्जा समाज में पुरुषों के समकक्ष होना चाहिये। वे स्त्री 'शूद्रो नाधीयताम्' के सिद्धान्त को गलत मानते थे।4 अपनी पुस्तक 'सत्यार्थ प्रकाश' जो मूलत: हिन्दी भाषा में लिखी गई है, में उनका मन्तव्य है कि जिन स्त्री-पुरूषों का विवाह हो उन्हें विद्या कुल, रूप, शरीर, धन, गुण, कर्मस्वभाव आदि में तुल्य होना चाहिये और विवाह सम्बन्ध का निर्धारण माता-पिता द्वारा न किया जाए बल्कि युवक-युवती द्वारा स्वेच्छापूर्वक किया जाना चाहिए। महर्षि ने स्वयंवर विवाह का समर्थन किया है।5

आर्य समाज और हिन्दी पत्रकारिता

सन् 1875 में बम्बई में आर्य समाज की स्थापना करके स्वामी दयानन्द सरस्वती ने जन-जागरण का शंखनाद किया। उसी समय पंडित शिवराजन के सम्पादकत्व में 'प्रयाग धर्म प्रकाश' नामक मासिक पत्रिका का उदय हुआ। इसमें संस्कृत तथा हिन्दी भाषा का समावेश था। प्रयाग से ही 'सुदर्शन समाचार' तथा बनारस से 'आनन्द लहरी' नामक साप्ताहिक पत्रिका धीरज शास्त्री के सम्पादकत्व में प्रकाशित की जाती थी। भारतेंदु हरिश्चन्द ने अपने निबन्ध 'कालचक्र' में स्वामी दयानन्द के उदय को 1870 की महत्वपूर्ण घटना बताया है। पत्रकारिता के सम्बन्ध में दयानंद और आर्य समाज की भूमिका बड़ी महत्वपूर्ण रही।

आर्य समाज के संस्थापक दयानंद सरस्वती तथा ब्रह्म समाज के संस्थापक केशवचन्द्र सेन शायद पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने भारत में एकता स्थापित करने के लिये राष्ट्रभाषा का प्रश्न उठाया और हिन्दी की व्यापकता देखकर उसका समर्थन किया। सेन ने लिखा है कि "इस समय भारत में जितनी भाषाएं प्रचलित थीं, उनमें हिन्दी भाषा प्रायः सर्वत्र प्रचलित है। इसी हिन्दी भाषा को यदि भारत की एकमात्र भाषा बनाया जाए तो यह कार्य शीघ्र ही समाप्त हो सकता है।6

केशवचन्द्र के निमन्त्रण पर स्वामी दयानन्द कलकत्ता गये। सेन ने ही उनसे संस्कृत छोड़कर हिन्दी भाषा के प्रयोग पर बल दिया। प्रचार हेतु ब्रह्म समाज पत्रिकाएं और छोटी-छोटी पुस्तिकाएं हिन्दी में निकाली। उन्हें देखकर स्वामी दयानन्द को इस माध्यम के महत्व का आभास हुआ। उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश की रचना हिन्दी में की।

उनके भाषण छप कर बंटने लगे और प्रचार हेतु हिन्दी में पत्रिकाएं निकलने लगीं।7

एक दिन हरिद्वार में एक सभा को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा, "नागरी के अक्षर थोड़े दिनों में सीखे जा सकते हैं। आर्यभाषा को सीखना कोई कठिन काम नहीं है। फारसी और अरबी के शब्दों को छोड़कर ब्रह्मावर्त की सभ्य भाषा ही आर्य माता है। यह कोमल और सुगम है जो इस देश में उत्पन्न होकर अपनी भाषा को सीखने में कुछ भी परिश्रम नहीं करता उससे और क्या आशा की जा सकती है ? उसमें धर्मलग्न है। इसका भी क्या प्रमाण है? आप तो अनुवाद की सम्मति देते हैं, परन्तु दया बन्द के नेता तो वह दिन देखना चाहते हैं, जब कश्मीर से कन्या कुमारी तक और अटक से कटक तक नागरी के अक्षरों का ही प्रचार होगा। मैंने आर्यवर्त में भाषा का ऐक्य सम्पादन करने के लिये ही अपने सकल ग्रन्थ आर्य भाषा में लिखे और प्रकाशित किये हैं।"8

1870 में ही दयानन्द के अनुयायी बख्तावर सिंह ने शहांजहापुर (उत्तरप्रदेश) से 'आर्यदर्पण' निकाला तथा इसके सफल सम्पादन के पांच साल बाद 'आर्यभूषण' भी निकाला। बाद में आर्य समाज के प्रचार हेतु अनेक पत्र-पत्रिकाएं निकलीं। मेरठ में 1878 में 'आर्य समाचार', फर्रूखाबाद से 1879 में 'भारत सुदशा प्रवर्तक', अजमेर से 1887 में 'देश हितैशी', 1882 में लाहौर से 'धर्मोपदेश' और काशी से 1882 में 'तिमिर शतक।' दयानन्द के निधन के बाद तो अनेक पत्र-पत्रिकाएं निकलीं, जिन्होंने प्रत्यक्ष रूप से हिन्दी के माध्यम से आर्य समाज के आंदोलन के प्रोत्साहित किया।

स्वामी दयानन्द ने भी विदेशी तथा स्वराज की आवाज उठाई थी। महात्मा गांधी के सारे कार्यक्रमों की रूपरेखा स्वामी दयानन्द के प्रचार में मिलती है। जहाँ भारतेंदु हरिश्चन्द्र ने धार्मिक वाद-विवाद में स्वामी दयानन्द के विरोधियों का साथ दिया, वहीं राष्ट्र के पुनरूत्थान और सामाजिक कुरीतियों के विरूद्ध दयानन्द का समर्थन किया। स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग पर तो इतना बल दिया कि कविवचन सुधा के पाठकों से शपथ लेने का आग्रह भी किया। 23 मार्च 1874 के अंक में तो यह स्पष्ट रूप से छपा था।

"हम लोग सर्वान्तरयामी सब स्थल में वर्तमान सर्वदृष्टा और नित्य परमेश्वर को साक्षी मानकर यह नियम मानते हैं और लिखते हैं कि हम लोग आज के दिन से कोई विलायती कपड़ा नहीं पहनेंगे और जो कपड़ा हम ले चुके हैं और आज की मिट्टी तक हमारे पास है, उसको तो उनके जीर्ण हो जाने तक काम में लेंगे, पर नवीन मोल लेकर किसी भांति का विलायती कपड़ा नहीं पहनेंगे।"10

स्वदेशी के लिये आर्य समाज ने जो अलख जगाई, उसके बारे में प्रताप नारायण मिश्र ने लिखा था, "हम और हमारे सहयोगीगण लिखते-लिखते हार गये कि देशोन्नति करो, पर यहाँ वालों का सिद्धान्त है कि अपना देश भले ही चाहे चूल्हे में जाये, यद्यपि जब देश चूल्हे में जायेगा तो हम भी न बचेंगे, सो भाइयो यह तुम्हारे ही मतलब की बात है। एक बार हमारे कहने से एक दो जोड़ा देशी कपड़ा बनवा लो। यदि कुछ सुभीता दिख पड़े तो मानना दाम कुछ दुगने न लगेंगे, चलेगा तिगुने से अधिक समय।

आगे चलकर भारतेंदु हरिशचन्द्र ने एक पत्रिका हरिश्चन्द्र निकाली। केशवचन्द्र सेन तथा स्वामी दयानन्द भी इसके सहायक सम्पादक थे। हरिश्चन्द्र चन्द्रिका के कुछ उद्धरण सत्यार्थ प्रकाश में देखे जा सकते हैं।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जून 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

7 मार्च 1881 के 'भारती विलास' पत्र में एक लेख छपा, जिसमें लिखा था कि स्वामी दयानन्द के समाज सुधार के कार्यो ने भारतीय समाज की काया पलटने का जो अभूर्तपूर्व आन्दोलन 'आर्य समाज' के रूप मे शुरू किया है। उसने भारतीय जनमानस को स्वदेश प्रेम के लिये जाग्रत कर दिया और इस कार्य मे स्वामी जी की सहायक बनी है हिन्दी भाषा। सच पूछो तो हिन्दी पत्रकारिता ने भारतीय जनमानस में आर्य समाज के सिद्धान्तों को समझने के लिये उनमे नवीन रक्त की धारा का संचार किया है।11

निष्कर्ष

आज आर्य समाज भारत में एक वर्ग के रूप मे स्थापित हो चुका है, जिसके अनुयायी भारतीय भाषा तथा रीतिरिवाजों के पूर्ण रूप से पक्षधर हैं। दयानन्द सरस्वती ने जिस प्रकार अपने विचारों तथा सिद्धांतों के आधार पर भारतीय जनमानस को उनके अतीत से पूर्ण परिचित कराया, उसमें हिन्दी पत्रकारिता का उल्लेखनीय योगदान है। तत्कालीन हिन्दी के समाचार पत्रों के संपादकों तथा साहित्यकारों ने अपनी लेखनी से आर्यसमाज के विचारों को इतना फैलाया कि यह आन्दोलन भारतीय समाज के सबसे निम्न वर्ग के हृदय तक में अपनी पैठ बना सका।

सन्दर्भ सूची

1 स्वामी दयानन्द के राजनीतिक विचार, डॉ. शान्ता मल्होत्रा, कल्पना प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 11

2 अट्ठारह सौ सत्तावन और स्वामी दयानन्द, वासुदेव वर्मा, भारतीय लोक समिति, करोल बाग, नई दिल्ली, पृष्ठ 212

3 भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में स्वराज्य प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती का योगदान, सत्यप्रिय शास्त्री, पृष्ठ 130

4 ऋग्वेद भाष्य, दयानन्द सरस्वती, भाग 1-4 वैदिक मंत्रालय

5 आर्य समाज का इतिहास, सत्यकेतु विद्यालंकार और हरिदत्त वेदालंकार, पृष्ठ 117

6 हिन्दी पत्रकारिता और स्वतंत्रता संग्राम, मदन गोपाल, पृष्ठ 73

7 वही

8 आज का भारत, रजनी पामदत्त, पृष्ठ 203

9 हिन्दी पत्रकारिता : राष्ट्रीय नव उद्बोधन, डॉ.श्रीपाल शर्मा, पृष्ठ 198

10 वही

11 भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन और उत्तरप्रदेश की हिन्दी पत्रकारिता, ब्रहमानन्द, वाणी प्रकाशन, पृष्ठ 236